Paper III
B.A. III Hons

द. पू. ए.

S.E.A. में भारतीय उपनिवेश

दक्षिण पूर्व एशिया के विविध देशों तथा चीन के साथ भारत का सम्बन्ध-व्यापार-के माध्यम से प्रारम्भ हुआ। भारतीय व्यापारी व्यापार द्वारा धन-कमाने के उद्देश्य से इन देशों में आना-जाना प्रारम्भ किए। बाद में धर्म-प्रचार तथा उपनिवेशों की स्थापना के लिए भी भारतीय लोग वहाँ जाने लगे। पर इसमें सन्देह नहीं कि बौद्ध, मौर्य तथा शुंग युगों में भारत और इन देशों के सम्बन्ध का प्रधान कारण व्यापार ही था। जातक कथाओं और कथासरित्सागर सदृश कथा-साहित्य में द. पू. ए. के देशों की यात्रा के विषय में जो भी कथाएँ दी गई हैं, उन सबमें यात्रियों और नाविकों का यही उद्देश्य था कि इन देशों में भारतीय पण्य को बेचकर और वहाँ के पण्य व सोने-चाँदी को भारत लाकर धन कमाया जाय। इन कथाओं में व्यापारियों तथा नाविकों को न तूफान से जहाज नष्ट हो जाने की चिन्ता थी व मार्ग में दस्युओं से लूटे जाने की और न किसी अज्ञात द्वीप में पहुँच जाने पर विकट परिस्थिति का सामना करने की। जहाज द्वारा समुद्रतट पर पहुँच कर वे ऐसे प्रदेशों में भी अपने पण्य ले जाते थे, जहाँ कोई सड़के नहीं थी।

द०पू० ए० के विविध प्रदेशों से उन्हें इतना बहुमूल्य पण्य और सोना-चाँदी प्राप्त हो जाते थे; कि इनके नाम ही सुवर्णद्वीप, रजकद्वीप, ताम्रद्वीप, यवद्वीप, शंखद्वीप, कर्पूरद्वीप और नारिकेल द्वीप आदि स्थानों से पण्य एवं सोना-चाँदी प्राप्त करते थे। इन नामों से ही सूचित हो जाता है कि इन प्रदेशों से उन्हें किस प्रकार की पण्य की प्राप्ति हुआ करती थी। धन के लिए सुदूर प्रदेशों की यात्रा करने वालों में प्राचीन भारतीय व्यापारी कोलम्बस और वास्को-डी-गामा सदृश मध्यकालीन यूरोपियन यात्रियों के समान ही साहसी थे। जिन भारतीयों ने पहले-पहल द० पू० ए० के इन प्रदेशों का पता किया, और उनके निवासियों के साथ व्यापार प्रारम्भ किया, यदि उनके यात्रा विवरण इस समय उपलब्ध हो सकें, तो वे कोलम्बस आदि के यात्रा वृतान्तों से किसी भी प्रकार महत्व से कम न होंगे।

व्यापारियों का अनुसरण कर भारत के धर्मप्रचारकों ने भी इन प्रदेशों में जाना प्रारम्भ किया। राजा अशोक के समय में आचार्य उपगुप्त के नेतृत्व में विदेशों में बौद्ध-धर्म के प्रचार के लिए जो आयोजन किया गया था उसमें सोण और उत्तर नाम के स्थविरों को

Scanned with CamScanner

सुवर्णभूमि भेजा गया था। वहाँ के राजा के कोई सन्तान जीवित नहीं थी, क्योंकि उसके समीपवर्ती समुद्र में एक राक्षसी रहती थी, जो राजा की सन्तान को जन्म लेते ही खा जाती थी। सोण और ~~अल~~ उत्तर ने उस राक्षसी की शक्ति का नाश किया, जिससे राजा की सन्तान की अकाल मृत्यु का भय दूर हुआ। सम्भवतः महावंश की इस कथा द्वारा यह संकेत मिलता है कि धर्म प्रचार के लिए सुवर्णभूमि जाने वाले के स्थविर चिकित्सा में भी प्रवीण थे और उन्होंने रोग रूपी राक्षसी का संहार कर राजा की सन्तान की प्राण रक्षा की थी।

कम्बोडिया का फू-नान राज्य कौण्डिन्य नाम के एक ब्राह्मण द्वारा स्थापित किया गया था। जो सम्भवतः वहाँ धर्म-प्रचार के लिए ही गया था। जब से बौद्ध स्थविर व धर्मप्रचारक द०पू० ए० के इन प्रदेशों में जाने लगे, तो उनका सम्पर्क वहाँ के निवासियों के साथ हुआ, जो सभ्यता के क्षेत्र में बहुत पिछड़े हुए थे। भारतीय प्रचारकों से उन्होंने न केवल धर्म की शिक्षा ग्रहण की, अपितु सभ्यता का पाठ भी पढ़ा। वे प्रचारक वहीं पर बस गए, और वहाँ की स्त्रियों से उन्होंने विवाह सम्बन्ध भी स्थापित कर लिए। इस प्रकार अनेक ऐसे उपनिवेशकों का सूत्रपात हुआ।

द० पू० ए० के क्षेत्र में बहुत से भारतीय उपनिवेश क्षत्रिय राजवंशों के कुमारों द्वारा भी स्थापित किए गए थे। ये कुमार अपने राज्य व मातृ-भूमि को सदा के लिए नमस्कार कर अपने साथियों के साथ इस क्षेत्र के विविध क्षेत्रों में आ बसे थे। कम्बोडिया वियतनाम मलाया बरमा आदि के कितने ही प्राचीन भारतीय उपनिवेशकों में यह अनुश्रुति विद्यमान थी कि उनके राजवंशों का प्रारम्भ भारत के राजकुमारों द्वारा किया गया।

ऐसा प्रतीत होता है कि कुषाण, शक आदि विदेशी आक्रान्ताओं के कारण, जब भारत के अनेक प्राचीन राज्यों की स्वतंत्रता का लोप हो गया, तो उनके राजवंशों के अनेक साहसी राजकुमारों ने इन सुदूर प्रदेशों में जाकर अपने स्वतंत्र राज्य

Scanned with CamScanner

राज्य स्थापित किया। भारत के इतिहास में यह परम्परा कोई नहीं थी। मगधराज जरासंध के आक्रमणों के कारण अन्धकवृष्णि गण के लोग कृष्ण के नेतृत्व में द्वारिका में जा बसे, और यवनों से आक्रान्त होकर पंजाब के मालवा तथा शिवि गणों ने राजस्थान की मरुभूमि में प्रवास किया था। कुछ इसी ढंग की प्रक्रिया भारत के मध्य प्रदेश के उन राज्यों तथा राजवंशों के साथ भी हुई, जिन्होंने कुषाणों तथा शकों द्वारा आक्रान्त किये जाने पर समुद्र पार के इन प्रदेशों में प्रवास किया और वहाँ नये उपनिवेशों व राज्यों की स्थापना की।

बरमा से वियतनाम और फिलिपीन तक फैली हुई मलय जातियों की भाषाओं का अध्ययन कर अनेक विद्वान इस परिणाम पर पहुँचे हैं कि इन भाषाओं का भारत की मुंडारी सन्थाली व खासी भाषाओं से साथ सम्बन्ध है और ये एक ही भाषा और परिवार के हैं। प्राचीन भारतीय साहित्य में नागों और मत्स्य गन्धा के विषय में जो कथाएं आती हैं उनसे मिलती-जुलती कथाएँ द०पू० ए० के अनेक प्रदेशों में भी पायी जाती हैं। इससे यह भी परिणाम निकाला गया है कि इन कथाओं का मूल-स्रोत एक ही है। संस्कृत साहित्य में इनका प्रवेश इन जातियों के साथ सम्पर्क के कारण हुआ।

उपर्युक्त वृत्तान्तों से प्रतीत होता है कि सर्वप्रथम तकुआ-पा में ही भारतीय उपनिवेश की स्थापना हुई और यहीं से पूर्व तथा दक्षिण की ओर भारतीयों का प्रवेश हुआ। नखोन-श्री धम्मरट में भारतीय ब्राह्मणों के वंशज मिलते हैं। लिआंग-सू के अनुसार द्वितीय कौडिन्य ने पंडो की राजगद्दी के निकट पन-पन नामक स्थान को भारतीय संस्कृति प्रधान की थी। जिन भारतीयों ने मलाया में प्रवेश किया वे उत्तरी तथा दक्षिणी भारत के निवासी थे। पुरातात्विक अवशेषों से पता चलता है कि यहाँ की प्राचीन वास्तुकला आदि ख्मेर-चम और भारतीय जावानी कला से मिलती जुलती है। शिल्प कला के जो प्रतीक हैं वे पूर्णतया भारतीय हैं।

Scanned with CamScanner